SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छात्र–छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (मध्यप्रदेश के गुना जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में)

श्यामसुन्दर श्रीवास्तव, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
देवर्षि कुमार शुक्ला, (Ph.D.), प्राचार्य
इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एंड टेक्नीकल एजूकेशन, पिपरौली, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
श्यामसुन्दर श्रीवास्तव, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
देवर्षि कुमार शुक्ला, (Ph.D.), प्राचार्य
इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एंड टेक्नीकल एजूकेशन, पिपरौली, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 17/02/2021
Plagiarism : 02% on 11/02/2021

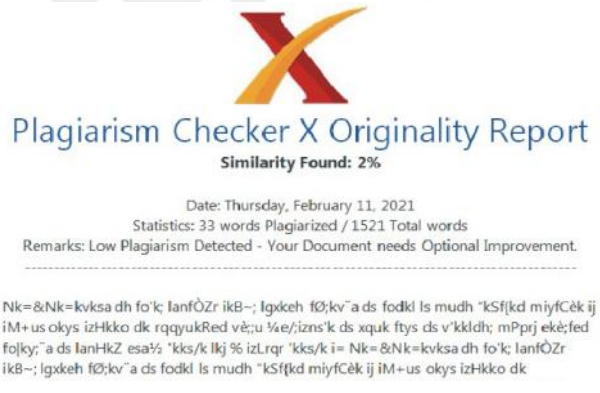
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Thursday, February 11, 2021
Statistics: 33 words Plagiarized / 1521 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Nk=&Nk=kvksa dh fo'k; lanfÒZr ikB~; lgxkeh fØ;kv¨a ds fodkl ls mudh "kSf{kd miyfCèk ij iM+us okys izHkko dk rqqyukRed vè;;u ¼e/;izns'k ds xquk ftys ds v'kkldh; mPprj ekè;fed fo|ky;¨a ds lanHkZ esa½ "kks/k lkj % izLrqr 'kks/k i= Nk=&Nk=kvksa dh fo'k; lanfÒZr ikB~; lgxkeh fØ;kv¨a ds fodkl ls mudh "kSf{kd miyfCèk ij iM+us okys izHkko dk

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र छात्र–छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (मध्यप्रदेश के गुना जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में) से सम्बन्धित है। वर्तमान समय के विद्यालय बालक के सर्वांगीण विकास के केन्द्र है, इसलिये अन्य विषयों की भांति पाठ्य सहगामी क्रियायें भी उनका अभिन्न अंग है विभिन्न खेलों व व्यायामों का क्रीड़ांगन नियमित अभ्यास छात्र–छात्राओं के लिये न सिर्फ प्रगति का पथ प्रशस्त करता है, अपितु जीवन में आने वाला समस्याओं और कठिनाईयों को समझने उनसे जूझने तथा उन पर विजय पाने मे सक्षम बनाता है। उनमें नेतृत्व, सहयोग, आत्म नियंत्रण तथा त्याग की भावना का विकास होता है तथा उनमें आत्म विश्वास सुदृढ़ होता है और उनमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का विकास होता है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से अशासकीय छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन है।

मुख्य शब्द

विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियायें, शैक्षिक उपलब्धि.

बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निम्न पक्षों के विकास आवश्यक है: शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक विकास। पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय के विषयों के शिक्षण में छात्रों के ज्ञानात्मक पक्ष का

विकास अधिक होता है, लेकिन भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं हो पाता, इसलिए इन पक्षों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को सहारा लिया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया है और उनके पाठ्य सामग्री का एक आवश्यक अंग माना गया है, क्योंकि इन क्रियाओं के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होगा। बालक के अच्छे मानसिक विकास के लिए अच्छा स्वास्थ्य आवश्यक है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाऐं छात्रों को अच्छा नागिरक बनने का प्रशिक्षण देती हैं। ऐसी गतिविधियां विद्यार्थियों को स्कूल में व्यस्त रखती है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण में श्रेष्ठ स्थान रखती हैं और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पूरा–पूरा योगदान देती हैं। इनमें शामिल होकर छात्र अपने गुणों की क्षमता से आगे निकलकर विकास करता है, इनमें आत्मनिर्भरता आती है, वे किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए सक्षम बनते हैं।

पाठ्य–सहगामी क्रियाऐं

ऐसी गतिविधियां जो विद्यालय में अध्ययन से संबंधित न होकर उनके नैतिक, शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास का स्तर का बढ़ाती हैं–पाठ्यसहगामी क्रियायें कहलाती हैं।

मुखर्जी (1963) के अनुसार ''पाठ्य सहगामी क्रियाओं के परिणाम बहुत सुखद होते हैं। इससे छात्रों में तार्किक एवं निर्णायक बुद्धि विकसित होती है इन क्रियाओं से तात्कालिक एकाग्रता का विकास होता है। इससे छात्र को अपने विभिन्न रुचियों को पूरा करने का मौका मिलता है और साथ ही बौद्धिक काल्पनिक एवं शारीरिक क्षमता का विकास होता है।''

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और प्रतिदिन इसका विस्तार होता जा रहा है। देश की प्रगति के साथ–साथ देशवासियों के जीवन में भी परिवर्तन आता जा रहा है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप विभिन्न संस्थाएं शारीरिक शिक्षा की गतिविधियां आयोजित कर रही हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में निम्नलिखित क्रियायें आती हैं:

(1) साहित्यिक क्रियायें – वादविवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता साहित्य परिषद, भाषा परिषद, विद्यालय पत्रिका। (2) संगीत तथा नाट्य क्रियाएं – नाटक, एकांकी, लघुवार्तालाप, मूक अभिनय। (3) खेलकूद तथा शारीरिक व्यायाम – कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट, खो–खो, फुटबॉल, ऊँची कूद, लम्बी कूद, भाला फेंकना। (4) शैक्षिक क्रियाएं – इतिहास संबंधी, भूगोल संबंधी, गणित संबंधी विज्ञान संबंधी, साहित्य संबंधी। (5) कला संबंधी – चित्रांकन, रेखाचित्र, व्यंग्य चित्र, संगीत, नृत्य। (6) सैनिक शिक्षा – बालचर, नेशनल कैडिट कोर (एन.सी.सी.)। (7) नैसर्गिक क्रियाएं – पर्यटन, उद्यानिकी, बालसभा, बाल मेला। (8) सामाजिक तथा आर्थिक क्रियायें – समाजसेवा, सुरक्षा संस्थायें सहयोगी समितियां, रेडक्रॉस, प्राथमिक चिकित्सा।

शैक्षिक उपलब्धि

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार, ''शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों को कार्य के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।''

उपलब्धि से तात्पर्य है कि शिक्षण के किसी क्षेत्र में शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देशों (शिक्षण के द्वारा कितनी मात्रा प्रकट होती है। जिस मात्रा में प्रदान किये गये प्रशिक्षण के द्वारा ज्ञान एवं कौशल का उपार्जन करता है। शैक्षिक उपलब्धि दो शब्द शैक्षिक + उपलब्धि के संयुक्त मेल से उत्पन्न हुआ है जहाँ शैक्षिक का अर्थ है शिक्षा के क्षेत्र में तथा उपलब्धि का अर्थ होता है 'प्राप्ति' जब हम शिक्षा के क्षेत्र में कोई प्राप्ति करते है तो इसे शैक्षिक उपलब्धि कहते है। उपलब्धि को निष्पत्ति, सम्प्रप्ति और ज्ञानार्जन आदि नामों से जाना जाता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि उच्च करने में सहायता मिलती है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में निखार आता है, वे चुस्त–दुरुस्त रहकर मानसिक रूप से सुदृढ़ होकर अध्ययन करत हैं जिससे

उनकी अध्ययन आदतें विकसित होती हैं, वे अपने को स्फूर्तिवान महसूस करते हैं।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शोध प्रक्रिया में प्रश्नावली साक्षात्कार का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के गुना जिले के 4 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 30 छात्र और 30 छात्राओं यानि कुल 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं हेतु स्व–निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिये पिछले वर्ष का परिणाम लिया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष

परिकल्पना 1

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 1 : अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
अशासकीय छात्रों के विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियायें	97.76	14.94	58	0.01	2.68	10.32
अशासकीय छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	67.50	5.90		0.05	2.01	

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

58 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 10.32 प्रामाणिक मान से दोनों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है, अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना 2

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 2 : अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
अशासकीय छात्राओं के विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियायें	96.76	8.81	58	0.01	2.68	16.51
अशासकीय छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि	66.03	5.13		0.05	2.01	

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

58 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 16.51 प्रामाणिक मान से दोनों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है, अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास होता है और वे स्वस्थ प्रसन्नचित होकर अपने अध्ययन में ध्यान लगाते हैं एवं उनमें नैतिक संबंधों की प्रशिक्षा, नेतृत्व की क्षमता, सदाचार की प्रशिक्षा, तथा अनुशासन तथा विद्यालय के भावनात्मक उन्नयन का विकास होता है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।

सुझाव

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों को रुचि लेना चाहिये जिससे उनमें अच्छे नागरिक बनने के गुण विकसित हो सकें।

2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में शामिल होकर छात्र अपने गुणों का विकास करके समाज में अपना स्थान बना सकता है।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को क्रियान्वित करने का कार्य मात्र एक व्यक्ति का नहीं है उसमें सभी लोगों का प्रोत्साहन एवं सहयोग अपेक्षित होता है, अतः संबंधितों छात्रों के हित के लिए सहयोग करना चाहिए।
4. समय–समय पर पाठ्य सहगामी क्रियाऐं कराना चाहिये जिससे विद्यार्थियों में पारस्परिक सहभागिता का विकास होता है।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. (1997). *सांख्यिकी विधियाँ,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. माथुर, एस.एस. (1973). *शिक्षा मनोविज्ञान,* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 1973.
3. त्रिपाठी, मधुसूदन (2007). *शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश,* खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
4. चावला, अनीता (1989–90). उपलब्ध सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययनः जिला पंचकुला के सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन।
5. शर्मा, आर.ए. (2006). *शिक्षा अनुसन्धान,* मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।
6. दुबे, सत्यनारायण (2000). *अध्यापक शिक्षा,* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

,

****